तिरुमल तिरुपति देवस्थान

बालसप्तगिरि

सचित्र मासिक पत्रिका

सितंबर-2020

सप्तगिरि का परिशिष्ट

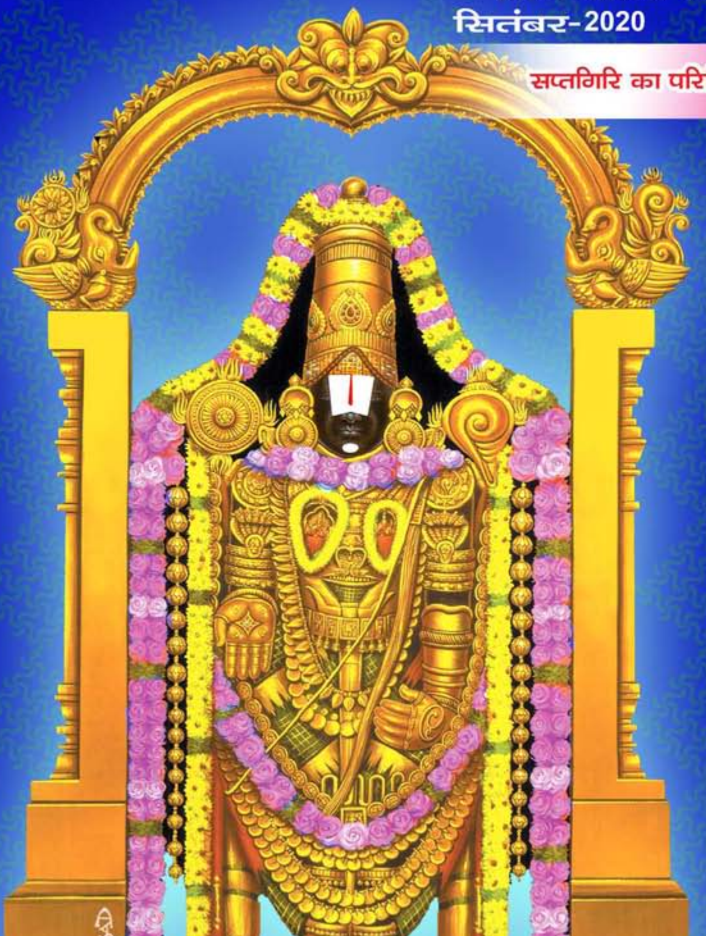

प्राणिकोटि को अभय देता है यह हस्त
सर्वसम्पद्प्रदाता है यह कंचन हस्त

- अन्नमय्या

दांडिया के माध्यम से सेवा समर्पण

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

बालसप्तगिरि

सप्तगिरि का परिशिष्ट

सितंबर-२०२०

वर्ष-०१
अंक-०७

विषयसूची

हिन्दू देवता	श्री वेंकटेश्वर स्वामी श्री सी.सुधाकर रेड्डी	04
पन्निद्दराल्वार	पेरियाळ्वार (श्री विष्णुचित्त सूरि) श्री कमल किशोर हि तापडिया	06
कन्नड हरिदासवरेण्य	भक्त विजयदास श्रीमती सी.मंजुला	08
चित्रकथा	तुम्बुरु तीर्थ तेलुगु मूल - श्री डी.श्रीनिवास दीक्षितुलु हिन्दी अनुवाद - डॉ.एम.आर.राजेश्वरी चित्रकार - श्री पी.शिवप्रसाद	10
बालनीति	सच्चे दोस्त श्रीमती टी.त्रिवेणी	14
विशिष्ट बालक		16
'क्विज'	डॉ.जी.मोहन नायुडु	17
चित्रलेखन		18

मुखचित्र - श्री बालाजी।
चौथा कवर पृष्ठ - श्री बालाजी के साथ अन्नमय्या।

हिन्दू देवता

श्री वेंकटेश्वर स्वामी

- श्री सी.सुधाकर रेड्डी

''वेङ्कटाद्रिसमं स्थानं ब्रह्माण्डे नास्ति किञ्चन
वेङ्कटेशसमो देवो न भूतो न भविष्यति।।''

वेंकटाद्रि का समतुल्य क्षेत्र इस ब्रह्माण्ड में कोई दूसरा नहीं है। वेंकटेश्वरस्वामी का समकक्षी देवता इससे पूर्व कभी नहीं हुआ था और भविष्य में नहीं होगा। कलियुग वैकुंठ जैसा प्रकाशमान श्रीवेंकटाद्रि पर अखिलांड कोटि ब्रह्माण्ड नायक, श्री वेंकटेश्वर स्वामी, अवतार ग्रहण करके प्रतिदिन भक्तों को दर्शन देते हुए अनुग्रहीत कर रहे हैं। एक पल के लिए ही सही, श्री वेंकटेश्वर स्वामी के दिव्यमंगल की मूर्ति का दर्शन करने के लिए बहुतेरे भक्त सहस्रों की संख्या में इस क्षेत्र की यात्रा करने के लिए आते रहते हैं।

इस दुनिया में श्री वेंकटेश्वर स्वामी को न जानने वाले कम ही होंगे। श्रीनिवास भगवान को इस कलियुग में 'प्रत्यक्ष देव' के रूप में माना जाता है। 'तिरुमल' में स्थित श्री वेंकटेश्वर मंदिर एक प्रसिद्ध हिन्दू तीर्थ स्थल है। यह यात्रा स्थल श्रीवैष्णव संप्रदाय के १०८ दिव्यदेशों में एक है। 'तिरुपति' भारतीय राज्य के आन्ध्रप्रदेश में चित्तूर जिले का एक शहर है। इस शहर से सटे पहाडियों पर श्री वेंकटेश्वर मंदिर जहाँ हैं, उस गाँव को ही 'तिरुमल' कहते है। इन दोनों को मिलाकर ''तिरुमल-तिरुपति'' के नाम से व्यवहार किया जाता है। समुद्र तल से ३२०० फीट ऊँचाई पर तिरुमल की पहाडियों पर स्थित श्री वेंकटेश्वर मंदिर यहाँ के सबसे बड़ा आकर्षण है। कई शताब्दियों के पहले बना यह मंदिर दक्षिण भारतीय वास्तुकला और शिल्पकला का अद्भुत उदाहरण है।

बुलाने के तुरन्त साक्षात्कार देनेवाला, वरप्रदाता श्री वेंकटेश्वर स्वामी जिस पहाड़ पर विराजमान है, उस पर भासमान स्वामी के दिव्यमंगल मूर्ति का, स्वामिपुष्करिणी का, पावन तीर्थों का, स्वामी को समर्पित नित्य कैंकर्यों का, स्वामी के ब्रह्मोत्सव आदि की विशेषताओं की विस्तृत जानकारी आप तिरुमल की यात्रा करने पर या पुस्तके पढ़ने पर अनुभव प्राप्त कर सकते हैं। इस कलियुग में भक्तों

की इच्छाओं को पूर्ण करनेवाला, आपदाओं को निपटनेवाला (तेलुगु में 'आपदलम्रोक्कुवाडु') एक मात्र देवता के रूप में माना जाता है। यह तो भक्तों का अपार विश्वास है। श्री वेंकटेश्वर भगवान को भक्त प्रेम से विविध नामों से बुलाते हैं। वे हैं- गोविंदा, श्रीनिवास, बालाजी, (ऐडुकोंडलु)सप्तगिरीश, वेंकटाद्रि, जनार्धन। भारत के दक्षिण प्रांत को छोड़कर अन्य प्रदेशों में श्री वेंकटेश्वर भगवान 'बालाजी' के नाम से विख्यात हैं। इन नामों में भगवान के लिए सबसे प्रिय नाम 'गोविंदा' है। तेलुगु में 'श्रीवारु' नाम अत्यंत प्रसिद्ध है।

वेंकटाद्रि ब्रह्माण्ड भर में प्रसिद्ध है, क्योंकि यहाँ की प्रकृति की रमणीयता अत्यंत मनमोहक होती है। वेंकटाद्रि एक नहीं, बल्कि सात पहाड़ों का भव्य, दिव्य समाहार है। इन सात पहाड़ों को 'सप्ताचल' कहते है। वे हैं- १) शेषाचलम्, २) वेंकटाचलम्, ३) नारायणाचलम्, ४) गरुडाचलम्, ५) नीलाचलम्, ६) वृषभाचलम्, ७) अंजनाचलम्। इन सात पहाड़ों में अनगिनत जल-पात एवं जल-धाराएँ तथा पुण्य जल-कुण्डों की उपस्थित हैं। वेंकटाचल वेद-काल से अनगिनत प्रख्यात ऋषियों, मुनियों का तपोस्थल है। दशावतारधारी, परंधाम की पुण्य-रस-झरी भगवान श्रीकृष्ण अपने अवतार की समाप्ति के बाद वैकुंठ गए सीधा इसी गिरि पर आ बसे। वेंकटाद्रि इस भूमंडल पर बसा साक्षात् वैकुंठ धाम है, जहाँ पर इन्द्र, यम, वरुण, कुबेर आदि दिक्पालकों प्रच्छन्न वेषधारी बन कर, कलियुग की कारण हेतु परंधाम, परमात्मा श्रीमहाविष्णु की मदद में कार्यरत है। साक्षात् श्री महाविष्णु के श्रीदेवी, भूदेवी समेत इस गिरि पर वास करने कारण, दैवकार्य संपन्न करने के सिलसिले में शिव, ब्रह्म, नारद, बृहस्पति, दिति, अदिति, कश्यप, वशिष्ठ, विश्वामित्र आदि देव और ऋषिगण यहाँ आया-जाया करते हैं।

यक्ष, गरुड, किन्नर, किंपुरुष, गंधर्व, विद्याधर आदि देव-गण यहाँ विविध प्रकार के कार्यों को संपन्न करने के क्रम में विचरण करते रहते हैं। अतएव वेंकटाद्रि नामक यह स्थान परम पवित्र बना है। आदि मध्यांत रहित, निर्विकार, ब्रह्मादिदेवताओं के लिए प्रभु, ब्रह्मांडों के लिए भर्ती करनेवाले, सर्वव्यापक होनेवाले श्री महाविष्णु को हमेशा स्तुति करने से अपने सभी दुःख मिटकर धन-दौलत उत्पन्न होता है। इसलिए करोड़ों लोग श्रीनिवास के दर्शन हेतु लोग तरसते रहते हैं। इंतजार करते रहते हैं। बालाजी के दर्शन करना हमारे सर्व पापों के लिए मुक्तिदायक हैं, ज्ञानदायक एवं सुखदायक हैं। ऐसे भगवान को हम जीवन भर स्मरण करना हैं।

ॐ नमो वेंकटेशाय!!

पेरियाळ्वार
(श्री विष्णुचित्त सूरि)

- श्री कमल किशोर हि तापडिया

गुरुमुखमनधीत्य प्राह वेदानशेषा -
न्नरपतिपरिकलरूपतम शुल्कमादातुकामः।
श्वशुरममरवन्द्यम रङ्गनाथस्य साक्षात
द्विजकुलतिलकन्तम विष्णुचित्तम नमामि।।

केरल प्रदेश के धन्विपुरी नामक ग्राम में मिथुन मास के स्वाति नक्षत्र के दिन गरुड़जी के अंश से श्री विष्णुचित्त आल्वार का अवतार हुआ। इनका एक नाम भट्टनाथ भी है। इनके आराध्य वटपत्र शायी भगवान थे।

अपने भगवान की पुष्प सेवा नित्यरूप से करना और भगवान का मङ्गलाशासन करना, इनके जीवन का एक मात्र उद्धेश्य बन गया। इन्होंने अपनी सारी सम्पत्ति को लगाकर भगवान की सेवा के लिये पुष्प का बगीचा लगा दिया था। रोज पुष्प की मालाएँ बनाना और अपने प्रिय वटपत्र शायी भगवान को निवेदन करना यही स्वामी का नित्य कैंकर्य था।

धन्विपुरी नगरी के पास ही मथुरा नामक नगर में विद्वतप्रिय एवं विद्वान बल्लभदेव नामक राजा राज्य करते थे। इस धर्म परायण राजा ने परतत्व निर्णय के लिये भव्य सभा का आयोजन किया। इस सभा में भगवान की स्वप्न में आज्ञा पाकर श्री विष्णुचित्त स्वामी श्री विष्णु ही परतत्व है यह सिद्ध करने के लिए पधारे।

अनेक प्रकार से उदाहरणों को अपनी प्रतिभाशाली वाणी से स्वामी ने परतत्व को सिद्ध किया। जिस समय श्री भट्टनाथ सूरि अपनी अपूर्व प्रतिभा से भगवान श्री विष्णु का परतत्व प्रतिपादन कर रहे थे, उसी समय जो विजय स्तम्भ बन्धा हुआ था अपने आप टूट कर गिर पड़ा। यह देखकर राजा एवं पुरोहित विद्वमण्डली के साथ आश्चर्य चकित होकर उन्हें सादर साष्टांग प्रणिपात निवेदित किया।

जिस समय श्री विष्णुचित्त सूरि का सत्कार किया जा रहा था उस समय भगवान विष्णु भी जगन्माता श्री लक्ष्मी के साथ उनको दर्शन दिये। श्री विष्णुचित्त स्वामी ने उनका **पल्लाण्डू पल्लाण्डू**... से मंगलाशासन किया। 'पेरियाळवार तिरुमोली' नामक प्रबन्ध पाठ की रचना की, जिसमें ४७३ पाशुर है। १२ पद का तिरुप्पल्लाण्डु इसी दिव्यप्रबन्ध का प्रथम दशक है। प्रबन्ध पाठ के प्रारम्भ में इस पाठ को निवेदन करना यह सम्प्रदाय है।

आण्डाल श्री गोदादेवी इनकी पोष्य पुत्री है।

श्री विष्णुचित्त स्वामी ने १३ दिव्यदेशों का मंगलाशासन किया है। भगवान का मंगलाशासन करने के कारण इन्हें महार्य यानी पेरियाळवार नाम से जाना जाता हैं।

शिक्षा - भगवान का मंगलाशासन करना यही इस जीव का परम कर्तव्य है।

कन्नड हरिदासवरेण्य

भक्त विजयदास

- श्रीमती सी.मंजुला

इसमें कोई संदेह नहीं हैं कि भगवान भक्तों को अपनी सेवा के लिए स्वयं बुलाते हैं। यह एक महान चमत्कार हैं कि श्री वेंकटेश्वर स्वामी ने अपने ब्रह्मोत्सव के दौरान एक भक्त को बुलाया और रथ को खिंचवाना एक महा अद्भुत है। उस परम भक्त और पवित्र आदमी कोई नहीं कर्नाटक के हरिदासवरेवण्य श्री विजयदास है। श्री वेंकटेश्वर स्वामी के प्रति रहे अटूट विश्वास ही उन्हें महान भक्त बना दिया। उनके माता-पिता श्रीमती कुसुमम्मा और श्री श्रीनिवासप्पा थे। वे गरीब ब्राह्मण परिवार के थे। वे श्री वेंकटेश्वर के भक्त थे। श्री विजयदास १७वीं शताब्दी में कर्नाटक, भारत की हरिदास परंपरा के एक प्रमुख संत और द्वैत दार्शनिक परंपरा के विद्वान थे। गोपालदास, हेवलोकट्टे गिरिम्मा, जगन्नाथ दास और प्रसन्न वेंकटेश दास जैसे समकालीन हरिदास संतों के साथ, उन्होंने कन्नड भाषा में लिखे गए देवर नामा के भक्तिमय गीतों के माध्यम से दक्षिण भारत में माधवाचार्य के दर्शन के गुणों का प्रचार किया।

कन्नड वैष्णव भक्ति साहित्य का एक अभिन्न अंग, हिन्दू भगवान विष्णु की स्तुति में इन रचनाओं को 'दशरपदगलु' (दासों की रचना) कहा जाता है। इन रचनाओं को विशेष रूप से कीर्तन, सूलादि, उपभोग और पद के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है। उन्हें संगीत वाद्ययंत्र की संगत में गाना आसान था। वे भक्ति और पवित्र जीवन के गुणों से संबंधित थे। वे पढाई के लिए चार वर्षों के लिए काशी (वाराणसी) गए और बाद में अपनी जन्म भूमि लौट आए। उन्होंने १६ साल की उम्र में अरालम्मा से शादी की और गरीबी के कारण घरेलू जीवन के लिए परेशान हुए थे। वे अपने माता-पिता की मृत्यु के बाद काशी (वाराणसी) वापस जाना चाहा। वे एक प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान बने। एक दिन उन्होंने एक सपना देखा, जिसमें श्री पुरंदरदास ने दिखाई दिया, उन्हें दासों के आदेश में शिक्षा दी और उन्हें 'विजय विट्ठल' का नाम दिया। तभी से उन्हें 'विजय दास' के नाम से जाना जाता था। उनकी रचनाएँ पवित्र के रूप में पूजनीय थीं।

कार्य - श्री विजयदास ने अपना पूरा जीवन द्वैत अवधारणाओं को, श्रीमदाचार्य और हरि भक्ति माला के कार्यों को लोकप्रिय बनाने में बिताए। उन्होंने लगभग २५,००० पद्य सूलादी याने 'उगहा भोगहा' की रचनाएँ लिखी है, उनकी रचनाओं को कलशा की कृतियाँ और उरसु की कृतियाँ कहा जाता है। कन्नड साहित्य में उनकी साहित्यिक कृतियों को श्री पुरंदर दास के बाद दूसरा माना जाता है। अपने व्यक्तित्व, ज्ञान और शानदार की वजह से अपने शिष्यों द्वारा 'दास श्रेष्ठ' नाम से बुलाया जाता है।

चमत्कार - श्री विजयदास ने एक महिला को खुद को और अपने बेटे को मारने से रोका। वे उनको परिवार के हिस्से के रूप में उनकी देखबाल करते थे। बाद में वह लडका उनका शिष्य बन गया और एक प्रसिद्ध हरिदास जिसे मोहनदास कहा जाता था। ऐसा कहा जाता हैं कि मोहनदास की मृत्यु के साथ एक और करीबी ब्रश था और इसे फिर से श्री विजय दास ने बचाया था। उन्होंने अपने शरीर से ४ साल और किसी और शरीर से ७ साल अपने बेटे को पुनर्जन्म दिया। वे तीन बार काशी गए और अपनी एक यात्रा के दौरान पवित्र गंगा में थे। उन्होंने नदी में डुबकी लगाई तो अपने कपडे और शरीर को गीला किए बिना, बहती हुई नदी के ऊपर पद्मासन में बैठ गए। आप्त वाक्य प्रमाण से ज्ञात होता हैं कि श्री वेंकटेश्वर स्वामी के आंतरिक भक्तों में से वे एक है श्री विजयदास। 'भृग्वरा संभूत' के नाम से जाना जाता है। उनके कुछ कीर्तन भगवान श्रीनिवास के प्रति गाए गए। वे निम्न प्रकार है।

''जयजय जगदीश जगन्निवास। जयजयलक्रुमि परितोष।
जयजय विजय सर्वेश जयजय। सर्वेश जयवेंदु स्तोत्रव माडिदे।''

इसका अर्थ इस प्रकार है- जय जय जगदीश, कहा जाता है, जगन्निवास लक्ष्मी को पुरस्कृत किए गए जय-जय विजेता, विगत नाश (अविनाशी नायक) कहते हुए सर्वशक्तिमान की प्रशंसा की।

''मापद पुव्वु पूसिद गंध-भूषण नाना परिपरिविधि।
एसु बगे यल्लिट्टि श्रीनि वासन श्रृंगार नोडिदे।''

उपर्युक्त पद का भाव इस प्रकार हैं- सुगंधित सुंदर खिलते फूलों के साथ चंदन से विविध प्रकार के आभूषणों से अलंकरित श्रृंगार से सुशोभित श्रीनिवास को देखा। श्री विजयदास ७९ वर्ष की आयु तक जीवित रहे, उन्होंने दुनिया को शांति साहित्य के माद्यम से शांति और हरि भक्ति का मार्ग दिखाए। हर साल कार्तिक शुद्ध नवमी के दौरान उनकी 'आराधना' चिप्पगिरि में मनाई जाती है, जो आन्ध्र प्रदेश के गुंतकल से लगभग ३ मील की दूरी पर है।

चित्रकथा

तुम्बुरु तीर्थ

तेलुगु में - श्री डी.श्रीनिवास दीक्षितुलु
हिन्दी में - डॉ.एम.आर.राजेश्वरी
चित्र - श्री पी.शिवप्रसाद

तुम मानो, ना मानो! वह गलत है, अकृत्य है।
तुम क्षमा के योग्य नहीं हो! तुम्हें दण्ड स्वीकारना पडेगा।
हे मित्र! मुझे माफ करो!
ऐसा काम मैं दोबारा नहीं करूँगा।
आज से आकाश गमन की तेरी शक्ति नष्ट हो जाएगी। सिर के बल पर पृथ्वी पर जा गिरो। यही मेरा शाप है।
हे देवर्षि नारद! मुझे क्षमा करो...
श्रीहरि के गान पुण्य के फलस्वरूप, तुरंत श्री वेंकटाचल के 'घोणतीर्थम्' पर तुम्बुर आ गिरे। तुम्बुर, वहाँ उपस्थित मुनिवरों से...
हे पुण्यजीवी! मैं कहाँ आया हूँ?
यह श्री वेंकटाचल है, श्रीहरि का नित्य निवास स्थान है!
यहाँ आ गिरना, तेरे पूर्व पुण्य फल का संकेत है!
तुम्बुर ने घटित घटना का विवरण मुनियों को देता है...
हे मुनिवर! मुझे भावी कर्तव्य का दिशा निर्देश कीजिए।

हाँ! आपने को कहा, वह वास्तविकता है।
हे गंधर्व! सामने के घोणतीर्थ में नित्यप्रति स्नान करके, श्री वेंकटेश्वर की कृपा प्राप्ति के लिए दीक्षापूर्वक कठोर तपस्या करो।
कितने समय तक मुझे तपस्या करना होगा!
पूरे एक वर्ष तक इस तीर्थ के कूल पर तप करो! निश्चित रूप से स्वामी तुम पर दया करेंगे।
कृतज्ञ हुआ हूँ! पाप-प्रक्षालण के लिए आपकी बातों का पालन करूँगा।

तुम्बुर की कठोर दीक्षा से प्रसन्न होकर, श्री वेंकटेश्वर स्वामी साक्षात्कार देते हैं तब तुम्बुर मधुर स्वर में भगवान का यशोगान करते हैं।

अगली पत्रिका में...

श्री वेंकटेश्वर स्वामी के दूसरी दिव्य लीला विलास का दर्शन करेंगे... तरेंगे!

स्वस्ति।

बालनीति

सच्चे दोस्त

- श्रीमती टी.त्रिवेणी

श्रीकृष्ण और सुदामा बचपन के दोस्त थे। वे दोनों सांदीपनी महर्षि के आश्रम में रहकर बलराम के साथ-साथ विध्याध्ययन कर चुके थे। कृष्ण बढे-बढे और धनी होते गए। लेकिन सुदामा अपनी पत्नी और बच्चों के साथ एक छोटी-सी झोंपडी में रहते थे। आखिरकार बच्चे की भूख इतनी खराब थी कि वह संतुष्ट भी नहीं हो सका। सुदामा की पत्नी ने उन्हें श्रीकृष्ण के पास जाने और मदद मांगने की सलाह दी। मित्र के पास जाकर सहायता के लिए पूछना, सुदामा के लिए चापलूसी एवं शर्मिंदा थी। इसलिए उसने उन्हें एक तरफ रख दिया और द्वारका चला गया।

सुदामा की पत्नी ने श्रीकृष्ण की पसंदीदा चावल की पोटली दी। द्वारका शहर के वैभव पर जनजाति विस्मित थी। लेकिन जब उन्होंने सुना कि सुदामा अपने दरवाजे पर इंतजार कर रहा है, तो श्रीकृष्ण बहुत खुश हुए, उन्होंने जो काम कर रहे थे उसको रोक दिया, उत्सुकता से दौडे, सुदामा को प्यार से गले लगाया और उन्हें अंदर बुलाया। इतना ही नहीं, बहुत प्यार से और सम्मान से सुदामा के पैर धोए उसके बगल में बिठा लिया और बचपन की मीठी यादों के स्मरण करके हँसे।

सुदामा ने बडे राजा, भगवान श्रीकृष्ण के लिए लाए गए चावल की पोटली को देने के लिए शर्म से पीछे-पीछे छिपा लिया। यह देखते हुए श्रीकृष्ण ने पूछा कि- ‘‘भाभी ने जो मेरे लिए उपहार भेजा है वह मुझे क्यों नहीं देते।’’ वे आगे कहते हैं कि एक बार गुरुकुल में गुरुमाता ने हमे चने

दिए थे परंतु मेरे हिस्से के चने भी तुम ही खा गए थे। श्रीकृष्ण ने हँस कर सुदामा से कहा कि- ''तुम चोरी करने में कुशल हो। अरे अपनी बगल में जो पोटली छिपा रहे हो, लाओ इसे मुझे दो।'' उसे अपने हाथ में लिया और खा लिया। फिर उन चावलों की प्रशंसा करते हुए कहते हैं कि ये तो अमृत रस परिपूर्ण है। पिछली बार की तरह अब भी तुम मुझे यह भाभी की भेंट देना नहीं चाहते थे। जब कि वास्तविकता यह थी कि सुदामा श्रीकृष्ण के राजसी ठाठ के कारण साधारण चावल उन्हें भेंट करना नहीं चाहते थे। उन्हें यह भेंट तुच्छ लग रही थी। सुदामा भगवान श्रीकृष्ण के प्यार और समर्थन के लिए बहुत खुश थे। वे छुट्टी लेकर अपने गृह लौट आए।

अपने गाँव आने के बाद उन्होंने देखा कि- एक बार उनकी झोंपडी चली गई और उन्होंने एक अच्छी इमारत देखी। पत्नी और बच्चों ने अच्छी तरह से कपडे पहने। वे बहुत अच्छे लग रहे थे। सुदामा ने सोचा कि वह भाग्यशाली है। उसने अपना मुँह नहीं खोला और कुछ भी नहीं कहा, मदद नहीं मांगी, लेकिन श्रीकृष्ण को पता था और उसे वह दिया जो वह चाहता था। यही सच्ची दोस्ती है, उसने सोचा।

सीख - सच्चे दोस्तों को मंजिल से काम नहीं, वे आपको सहज बनाए रखना ही अपना कर्तव्य समझते हैं। वही सच्ची दोस्ती।

विशिष्ट बालक

नाम : जे.श्रीचरण

जन्म दिनांक : १७-०९-२०११

कक्षा : चौथी कक्षा

विद्यालय : मोड्रन हयर सेकंडरी स्कूल, नंगनल्लूर, चेन्नै।

माताजी का नाम : श्रीमती रम्या जनार्धन

पिताजी का नाम : श्री जनार्धन

प्रतिभा के लिए पुरस्कार :

श्री हयग्रीव कल्चरल अकादमी, कट्टुपक्कम वालों से संचालित कर्नाटक संगीत (मौखिक रूप) प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार। श्री हयग्रीव कल्चरल अकादमी, कट्टुपक्कम वालों से संचालित तमिल भाषा की वाक् प्रतियोगिता में तृतीय पुरस्कार। एडी हाण्डी क्राफट्स क्वारेन्टाइन सूपर हीरोस वालों से संचालित भक्ति संगीत प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार।

अडम्बाक्कम रोटरी क्लब वालों से संचालित श्लोक वाचन(वेंकटेश प्रपत्ति) प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार। लोटस सोशियल वेल्फेर चारिटबुल ट्रस्ट, चेन्नै वालों से संचालित स्वतंत्रता दिवस संदर्भीय देशभक्ति गीत प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार। पर्पुल विंग्स अकादमी वालों से संचालित देशभक्ति गान प्रतियोगिता में द्वितीय पुरस्कार। आर्ट ड्रीम एक्स-प्रेस स्टूडियो, चेन्नै वालों से संचालित शास्त्रीय संगीतात्मक देशभक्ति गीत प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार। आल्फा डान्स स्टूडियो, नंदनम् वालों से संचालित मौखिक संगीत(भजन) प्रतियोगिता में द्वितीय पुरस्कार।

स्मार्ट सूपर स्टार्स-२०२० वालों से संचालित मौखिक संगीत(गोकुलाष्टमी के विशेष संदर्भ में) प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार। स्मार्ट सूपर स्टार्स-२०२० वालों से संचालित वर्ड सर्च पजिल प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार। कलाश्रय मंच म्यूजिक अकादमी वालों से संचालित मौखिक संगीत(जन्माष्टमी के विशेष संदर्भ में) प्रतियोगिता में तृतीय पुरस्कार।

वलियंत अकादमी, अशोक नगर वालों से संचालित कृष्ण जयंती-संगीत प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार। ट्विंक्लिंग स्टार किड्स, चेन्नै वालों से संचालित जन्माष्टमी संगीत प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार। एक्सेक्टिक्स सोल्यूशन, प्रा.लि. वालों से 'स्टन्निंग वोकलिस्ट अवार्ड' कर्नाटक संगीत में सर्वोत्तम गायक के रूप में जे.श्रीचरण को इस कंपनी ने पुरस्कार दिया। डॉल्फिन अकादमी, चेन्नै वालों से संचालित श्लोक वाचन(गीता वाचन) प्रतियोगिता में 'बेस्ट पर्फार्मर' पुरस्कार प्राप्त लिया।

‘क्विज’

आयोजक - डॉ.जी.मोहन नायुडु

१. भगवान शिव के वाहन का नाम क्या है?

क) मयूर ख) नंदी
ग) कौआ घ) गाय

२. महाभारत में धृतराष्ट्र की पत्नी का नाम क्या है?

क) गांधारी ख) सुभद्रा
ग) कौसल्या घ) कैकेई

३. गेणशजी का वाहन कौन-सा है?

क) हाथी ख) बाघ
ग) मूषिक घ) हँस

४. श्रीरामचन्द्रजी का वंश कौन-सा है?

क) सूर्य ख) चन्द्र
ग) तुलुव घ) गुप्त

५. रामायण काल में लंका के राजा कौन थे?

क) विभीषण ख) रावण
ग) वालि घ) सुग्रीव

६. महाभारत के युद्ध में ‘अर्जुन’ के रथसारथी का नाम क्या है?

क) द्रोणाचार्य ख) कर्ण
ग) श्रीकृष्ण घ) भीष्म

७. सीता के पिता का नाम क्या है?

क) दशरथ ख) जनक
ग) कश्यप घ) विदुर

उत्तर - १) ख २) क ३) ग ४) क ५) ख ६) ग ७) ख

चित्रलेखन

इस चित्र को रंगों से अब भरें क्या?

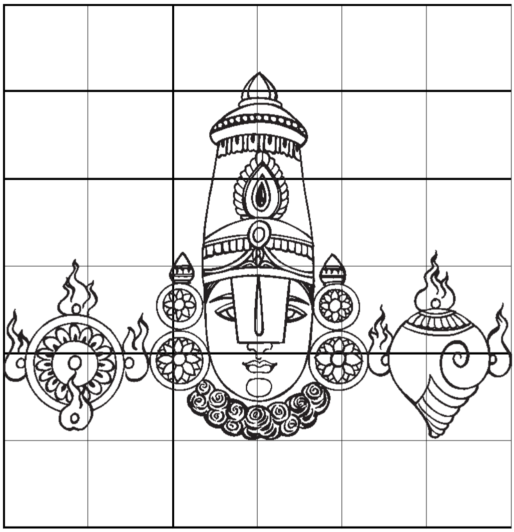

ऊपर सूचित चित्र को नीचे के डिब्बों में खींचिये -

तादात्म्यता के साथ श्रीहरि को नृत्यांगनाओं का सेवा समर्पण

SAPTHAGIRI (HINDI) ILLUSTRATED MONTHLY Published by Tirumala Tirupati Devasthanams
printing on 25-08-2020. Regd. with the Registrar of Newspapers under "RNI" No.10742,
Postal Regd.No.TRP/11 - 2018-2020
Licensed to post without prepayment No.PMGK/RNP/WPP-04/2018-2020

अहो भाग्य मिला हमें विष्णु कथा सुनने के लिए
समूल शक्तिप्रदायिनी है यह विष्णु कथा...

\- अन्नमय्या